SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों में आक्रामकता और समायोजन का अध्ययन

रेखा जीवनानी, पीएच–डी., शिक्षा अध्ययनशाला
शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, जगदलपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
रेखा जीवनानी, पीएच–डी.
E-mail : jivnani01@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/04/2025
Revised on : 10/06/2025
Accepted on : 19/06/2025
Overall Similarity : 01% on 11/06/2025

शोध सार

वर्तमान अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आक्रामकता और समायोजन के मध्य संबंध को समझने का प्रयास किया गया है। शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययन करने वाले 15–16 वर्ष की आयु वर्ग के कुल 1000 किशोरों (500 लड़के और 500 लड़कियां) का अनुपातहीन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन किया गया। आक्रामकता के मापन के लिए माथुर और भटनागर (2012) और ए.के.पी. सिन्हा और आर.पी. सिंह (2013) द्वारा समायोजन सूची का उपयोग किया गया। छात्रों की आक्रामकता के साथ भावनात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और कुल समायोजन के बीच नकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध पाया गया इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जैसे–जैसे भावनात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और समग्र समायोजन बढ़ता है, छात्रों की आक्रामकता कम होती जाती है. लेकिन इसके विपरीत आक्रामकता के साथ शैक्षिक समायोजन का कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया, अतः यह भी कहा जा सकता हैं कि शैक्षिक समायोजन छात्रों की आक्रामकता को प्रभावित नहीं करता है।

मुख्य शब्द

आक्रामकता, समायोजन, पर्यावरण, भावनात्मक और सामाजिक समायोजन, विद्यार्थी.

प्रस्तावना

किशोरावस्था विकास की वह अवस्था है जो बचपन और वयस्कता के बीच का पुल है। किशोरावस्था की अवधि आम तौर पर आत्म–अन्वेषण और पहचान की तलाश से जुड़ी होती है। यह जीवन की एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवस्था है, क्योंकि किशोरों को शरीर और मन के विकास के साथ ही समाज में समायोजन के लिए आवश्यक स्वयं की सुसंगत भावना को खोजना होता है।

इस प्रकार, जीवन की सबसे कठिन विकासात्मक अवधि शायद किशोरावस्था की अवधि ही है। किशोरावस्था को कभी–कभी तनाव और स्वयं के बारे में अनिश्चितता से भरा हुआ माना जाता है, जो अचानक और लगातार मूड बदलावों से भरा होता है, जिसे पहचान संकट के रूप में जाना जाता है। इस स्तर पर, शारीरिक और भावनात्मक परिवर्तनों से निपटने के अलावा, एक किशोर को माता–पिता की अपेक्षाओं, उसके करियर और स्कूल के साथ आना पड़ता है, जो कभी–कभी उस पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। किशोर आमतौर पर तनाव, चिंता, हताशा और समायोजन समस्याओं से ग्रस्त होते हैं (खान और आलम, 2015)।

समायोजन निरंतर है, और यह सातत्य पर भी मौजूद रहता है। एक छोर पर तथाकथित अच्छी तरह से समायोजित व्यक्ति होता है, जो कई मामलों में हमेशा बदलता रहता है और हमेशा अनुकूलित होता रहता है। यह व्यक्ति नई जरूरतों के बढ़ने पर अनुकूलन करने में सक्षम होता है। दूसरी ओर खराब रूप से समायोजित व्यक्ति होता है, जो चिंता, आक्रामकता या अव्यवस्थित सोच के लक्षण दिखा सकता है। आम तौर पर यह व्यक्ति कम अनुकूलनशील होता है, परिस्थितियों की परवाह किए बिना एक ही तरह से प्रतिक्रिया करता है.परिणामस्वरूप उसका व्यवहार अक्सर अनुपयुक्त होता है। समायोजन, हालांकि एक सार्वभौमिक घटना है, इसका अध्ययन इसके विभिन्न पहलुओं या आयामों जैसे स्वास्थ्य, भावनात्मक, सामाजिक, घरेलू और शैक्षिक समायोजन के माध्यम से किया जा सकता है। कार्टर वी गुड (1959) के अनुसार. समायोजन पर्यावरण या पर्यावरण में परिवर्तनों के लिए उपयुक्त व्यवहार के तरीकों को खोजने और अपनाने की प्रक्रिया है।

शोध साहित्य की समीक्षा

यिल्डिज (2021) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के स्कूली जीवन की गुणवत्ता और आक्रामकता के स्तर के बीच संबंध का अध्ययन किया। छात्रों के लिंग, स्कूल की उपलब्धि, दोस्ती के रिश्ते, स्कूली जीवन की गुणवत्ता, आक्रामकता के औसत अंकों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

अंसारी (2022) भारत के पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में स्नातक छात्रों के एक अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी पुरुष या महिला के मध्य सामाजिक समायोजन के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कौर और घोष (2022) ने अध्ययन में पाया कि युवा वयस्कों में आक्रामकता और समायोजन के क्षेत्र में पुरुष वर्ग ने क्रोध, शारीरिक आक्रामकता, शत्रुता और मौखिक आक्रामकता जैसे सभी क्षेत्रों में महिलाओं की तुलना में अधिक अंक प्राप्त किए। समायोजन पैटर्न में महिला वर्ग ने इसके प्रत्येक क्षेत्र पर अधिक प्रभुत्व व्यक्त किया।

गुप्ता एवं फातिमा (2023) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता, समायोजन, आक्रामकता और शैक्षणिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणाम आक्रामकता और शैक्षणिक सफलता के बीच एक नकारात्मक सहसंबंध और भावनात्मक बुद्धिमत्ता और बेहतर समायोजन एवं बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध दिखाते हैं। यह उल्लेखनीय है कि इन तत्वों का ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर अलग–अलग प्रभाव पड़ता है। शहरी छात्रों के बीच यह अधिक स्पष्ट है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन से जुड़ी है। ये निष्कर्ष शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए आक्रामक व्यवहार को संबोधित करने और भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समायोजन कौशल को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर देते हैं, खासकर विविध छात्र निकाय वाले स्कूलों में। अध्ययन का व्यापक लक्ष्य छात्रों के भावनात्मक और व्यवहारिक विकास को लक्षित करने वाले उपचारों की सिफारिश करके, विभिन्न सामाजिक–पर्यावरणीय परिस्थितियों में शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाना है।

झा एवं यादव (2024) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन, सामाजिक व्यवहार और अध्ययन आदतों पर पारिवारिक संबंधो के प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष मे पाया गया कि पारिवारिक माहौल, संस्कृति, और मूल्यों का असर छात्रों के शैक्षिक अनुभवों पर पडता हैं। यह अध्ययन छात्रों के शैक्षिक अनुभव के सुधार में महत्वपूर्ण संदेश एवं नीतियो की सिफारिश करता है।

यादव एवं सैनी (2025) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में किशोर छात्रों के आक्रामक व्यवहार और उनके समायोजन के साथ संबंध का अध्ययन किया। यह अध्ययन आक्रामकता का स्तर छात्रों की सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षणिक रूप से अनुकूलन करने की क्षमता को प्रभावित करने की जांच करता है। मात्रात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, निष्कर्ष पुरुष और महिला छात्रों के बीच आक्रामकता के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही पाया गया।

उद्देश्य

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आक्रामकता और समायोजन के संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना

H_{01} उच्चतर माध्यमिक छात्रों की आक्रामकता और समायोजन के प्राप्तांकों के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं पाया जायेगा।

कार्यप्रणाली

न्यादर्श

शहरी क्षेत्रों के स्कूलों से 1000 उच्चतर माध्यमिक छात्रों का चयन असमानुपातिक स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य के पाँच जिलों अर्थात् दुर्ग, रायपुर, धमतरी, महासमुंद और सूरजपुर. अंबिकापुर के 25 सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों और 25 निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया, सरकारी स्कूलों के 500 उच्चतर माध्यमिक छात्रों (250 पुरुष और 250 महिला) और निजी स्कूल के 500 उच्चतर माध्यमिक छात्रों (250 लड़कियाँ और 250 लड़के) का नमूना चुना गया।

उपकरण

आक्रामकता मापनी

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के तनाव के मापन के लिए माथुर और भटनागर (2012) द्वारा आक्रामकता पैमाने का प्रयोग किया गया।

समायोजन मापनी

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन के मापन के लिए ए.के.पी. सिन्हा और आर.पी. सिंह (2013) द्वारा समायोजन सूची का प्रयोग किया गया।

आंकडो का विश्लेषण

H_{01} उच्चतर माध्यमिक छात्रों के आक्रामकता एवं समायोजन के प्राप्तांको के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नही पाया जायेगा।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आक्रामकता और समायोजन (भावनात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और शैक्षिक समायोजन) के बीच सहसंबंध की परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए, सहसंबंध के सूचकांकों की गणना कर उन्हें निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है:

तालिका: समायोजन के तीन आयामों और कुल समायोजन स्कोर के साथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आक्रामकता के बीच सहसंबंध मैट्रिक्स

समायोजन और इसके आयाम	आक्रामकता
भावनात्मक समायोजन	–.085''
सामाजिक समायोजन	–.187''
शैक्षणिक समायोजन	.007NS
समायोजन का कुल स्कोर	–.124''
'' = 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण, NS= महत्वपूर्ण नहीं	

परिणाम एवं विवेचना

तालिका से यह स्पष्ट है कि आक्रामकता और समायोजन के विभिन्न आयामों यानी भावनात्मक समायोजन (r= – 0.01 महत्व के स्तर पर) (r= – 0.085), सामाजिक समायोजन (r= – 0.187) और कुल समायोजन (r= – 0.124) के बीच तीन सकारात्मक सहसंबंध हैं। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि छात्रों की आक्रामकता के साथ भावनात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और कुल समायोजन में नकारात्मक और महत्वपूर्ण सहसंबंध है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि जैसे–जैसे भावनात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और समग्र समायोजन बढ़ता है, छात्रों की आक्रामकता कम होती है. इसके विपरीत भावनात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और समग्र समायोजन कम होने पर छात्रों की आक्रामकता बढ जाती है। लेकिन आक्रामकता के साथ शैक्षिक समायोजन का सहसंबंध गुणांक 0.007 पाया गया जो महत्वपूर्ण नहीं है, जिससे पता चलता है कि छात्रों की आक्रामकता और शैक्षिक समायोजन के बीच कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं है दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि शैक्षिक समायोजन छात्रों की आक्रामकता को प्रभावित नहीं करता है।

निष्कर्ष

- विश्लेषण किए गए आंकड़ों से ज्ञात होता है कि लड़के लड़कियों की तुलना में अत्यधिक आक्रामक होते हैं, हालांकि लड़के और लड़कियां दोनों ही आक्रामक स्वभाव के होते हैं, लेकिन लड़के अधिक आक्रामक व्यवहार दिखाते हैं।
- जबकि सामाजिक समायोजन, भावनात्मक समायोजन और शैक्षिक समायोजन में लड़कियो ने लड़को की तुलना में अधिक अंक प्राप्त किये।
- अवलोकन में सरकारी छात्र निजी स्कूल के छात्रों की तुलना में बेहतर सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षिक समायोजन दिखाते हैं।
- जबकि निजी स्कूल के छात्र सरकारी स्कूल के छात्रों की तुलना में उच्च आक्रामकता, चिंता, हताशा, दबाव और तनाव दिखाते हैं।

निष्कर्षों के कारण

निष्कर्षों के कारणों की श्रेणियाँ इस प्रकार हैं:

सामान्य कारण

- **परिवारिक पाष्ठभूमि:** आजकल माता–पिता दोनों ही कामकाजी होने के कारण वे अपने बच्चे के साथ पर्याप्त समय नहीं बिता पाते। वे इस कमी की भरपाई कई सुविधाएँ या पैसे देकर करते हैं। उनके पास अपने बच्चों की उपलब्धियों की सराहना करने का कोई अन्य तरीका नहीं है। उनके पास उनकी गलतियों पर उन्हें मार्गदर्शन देने का समय भी नहीं होता। ऐसी पृष्ठभूमि वाले छात्रो की उपयुक्त देखभाल नही होने के कारण वे ना ही सीखते हैं, ना ही अपनी समस्याओं को साझा कर पाते हैं जिससे वे बड़ों का सम्मान भी नहीं करते। यह पूरा कारक उनके आक्रामक स्वभाव का कारण बनता है।
- **विद्यालय की भूमिका:** विद्यालय दूसरा स्थान है जहाँ छात्र अपनी दिनचर्या का सबसे अधिक समय व्यतीत करता है इसलिए विद्यालय भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक बच्चे के व्यक्तित्व को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पढ़ाई का बोझ भी आक्रामकता को जन्म देता है और छात्र के अपने सहपाठियों के साथ संबंध भी आक्रामकता को प्रभावित करते हैं (जैसे कठोर, टिप्पणी, राय में अंतर, कक्षा में अंतर आदि)।
- **समाज की भूमिका:** जिस समाज में हम रहते हैं वह भी बच्चों के व्यवहार के लिए जिम्मेदार है, वर्ग भेद, गरीबी, नौकरियों की कमी, समाज में भेदभाव और कई अन्य विशेषताएं छात्रों के व्यवहार के लिए जिम्मेदार हैं। यह उनके व्यवहार में आक्रामकता, तनाव और चिंता को बढ़ाता है।

- **मीडिया की भूमिका:** मीडिया और सोशल मीडिया छात्रों के मन और स्वभाव पर नकारात्मक भूमिका निभाते हैं। यह हिंसा, आक्रामकता, अनैतिकता और असभ्य भाषा को इतने सुंदर तरीके से प्रस्तुत करता है कि छात्र इसका अनुसरण करने से खुद को रोक नहीं पाते।

निहितार्थ

माता–पिता के लिए

- उनके साथ समय बिताएं।
- अच्छे कामों के लिए प्रेरित करें और बुरी आदतों के लिए हतोत्साहित करें।
- उन्हें भाई–बहनों के साथ अपनी समस्याएं साझा करने और देखभाल करने जैसे कुछ सामाजिक मूल्य दें।
- उन्हें दोस्ताना माहौल दें और उनके साथ दैनिक दिनचर्या में बात करके उन्हें खुश रखें।

शिक्षकों के लिए

- उन्हें दोस्ताना माहौल में पढ़ाएँ।
- कभी भी कठोर टिप्पणी न करें।
- अशिष्ट व्यवहार न करें।
- उन्हें अतिरिक्त सह–पाठ्यचर्या गतिविधि कराएं।
- अनावश्यक सख्ती न दिखाएँ।
- अभिभावक शिक्षक बातचीत अनिवार्य रूप से करें।

मीडिया के लिए

- मीडिया को हिंसा, दुर्व्यवहार और आक्रामकता को बढ़ावा देने से बचना चाहिए।
- माता–पिता को मीडिया का सकारात्मक उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए।
- हिंसा और आक्रामकता को बढ़ावा देने वाली वेबसाइट और मीडिया गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Agbakwuru, C.; & Agbakwuru, G.A. (2012) Improving intellectual functioning and school adjustment of children through Bilingual education, *The Educational Psychologist* 6(1) : 183-187.
2. Ara, S.; Ahad, R.; & Shah, S.A. (2013) Emotional intelligence and aggression among adolescent orphans of Kashmir. Regional science congress (ISCA) and 9th science congress, 2013 university of Kashmir, DST (GOI), J and K Sc S and T and ISCA, 142.
3. Attar, E. (2015) Psychological adjustment and its relationship with aggressive behavior among secondary stage students at Jeddah city, *Global Science Research Journals*. 3(4) 107-113.
4. Banga, C.L. (2015) Aggression of secondary school students in relation to their gender and type of school, *Scholarly Research Journal For Huminity Science and English Language*. 2(11) : 2671-2679.
5. Basu, S. (2012) Adjustment of secondary school students, *Scholarly Research Journal For Interdisciplinary students*, Vol. I (III) : 430-438, Oct - Nov - 2012.
6. Bhagat, P. (2016) Comparative study of adjustment among secondary school boys and girls, *International Journal of Applied Research*. 2 (7) : 91-95.

7. Bharadwaj, R.L. (2008) *Aggression Scale,* Pankaj Mapan, Agra.
8. Chauhan, V. (2013) A study on adjustment of higher secondary school students of Durg District, *IOSR Journal of Research and Method in Education*, 1(1):50-52.
9. Choube, S. P.; & Choube, A. (2011) *Handbook of Education and Psychology,* Neelkamal Publications Pvt. Ltd. Hydrabad. First Adition, Volume-1, 103-106.
10. Das, P.P.P.; & Tripathy, S. (2015) Role of emotional intelligence on aggression : A comparision between adolescent boys and girls, *Psychology and Behaavioral Sciences*, 4(1) : 29-35.
11. Fatima, S.; & Malik, S.K. (2015) Causes of student's aggressive behavior at secondary school level, *Journal of Literature, Languages and Linguistics*, Vol. (11) : 49-65.
12. Gehlawat, M. (2011) A study of adjustment among high school students in relation to their gender, *International Referred Research Journal*, 3(33):14-15.
13. Gira, B.P. (2012) A study of adjustment of secondary school students, *Shodh Samikshaaur Mulyankan,* 41(4):21-22.
14. Gupta, N. (2013) A study of problems of adjustment of senior secondary school students, *Conflux journal of Education,* 1(2) : 93-94.
15. Gupta, B.K. & Mohammadi, F. (2023) exploring the influence of emotional intelligence, adjustment, and aggression on academic performance among bahraich district secondary school students, *Journal of Namibian Studies : History Politics Culture*, *38*, 2362-2371.
16. Javdan, M. (2013) Factors affecting the incidence of aggression in guidance school students, *Am.J Life. Sci. Res*. 1 (1) L 1-10.
17. Jha, M.M. & Yadav, R.P. (2024) A study of the influence of family relations on adjustment, social behaviour and study habits of secondary school students, *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR)*, Vol11, Issue 6, p. a783-a789.
18. Kaur, M. (2022) Aggression and adjustment among young adults, *International Journal of Research and Development (IJRD),* 8(1), p. 8992-9008.
19. Reza, K.N.; & Zahra, M. (2015) The impact of emotional intelligence training on aggressive students social adjustment, *Journal of Applied Environmental and Biological Sciences* 5 (58) 291-296.
20. Vishal. P.; & Kaji, S.M. (2014) Adjustment of boys and girls school level students in Ahmedabad, *The International Journal of Indian psychology*, Vol - II, Issue I, 31-37.
21. Yildiz,I. (2021) The Relationship Between Secondary School Students' Quality of School Life and Aggression Level. *Turkish Journal of Family Medicine & Primary Care*, 15(2), p. 236-243.
22. Yadav, J. & Saini, R.(2025) study of aggressive behaviour of adolescent students of higher secondary school and their adjustment on the basis of rural and urban students, *International Research Journal of Modernization in Engineering Technology and Science,* Volume 7, Issue 4, p. 788-792.

****